



असथाप्य

PUBLISHED BY AUTHORITY

NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 12, 2006/KARTIKA 21, 1930

सं. 118/2008-सोया शुल्क (गै.टै.)

जरातें कि, यदि कोई व्यक्ति, एक ही माल से संबंधित, अपराध करता है जो कि निम्नलिखित सारणी में उल्लिखित एक से अधिक वर्गों में आते हैं, और जहां शुल्क अपवचन की राशि, या द्वा बैंक की राशि या शुल्क से छूट, जो कि इस अधिनियम में निर्धारित माल के संबंध में उल्लिखित है, या ऐसे माल के बाजार मूल्य की राशि ऐसे सभी अपराधों के लिए भी वही है तो ऐसे मामलों में शमन की राशि भी वही होगी जो कि उस अपराध के लिये निर्धारित की गई होगी, जिसके लिए उच्च शमन राशि निर्दिष्ट की गई है :

सारणी

क्र. सं.	अपराध	शमन राशि
(1)	(2)	(3)
1.	इस अधिनियम की धारा 132 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	पहली बार के अपराध के लिए पचास हजार रुपये और इसके पश्चात् ऐसे ही हर अगले अपराध के लिए इस राशि में शत प्रतिशत की बढ़ोतरी होती जायेगी।
2.	इस अधिनियम की धारा 133 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	पहली बार के अपराध के लिए पचास हजार रुपये और इसके पश्चात् ऐसे ही हर अगले अपराध के लिए इस राशि में शत प्रतिशत की बढ़ोतरी होती जायेगी।
3.	इस अधिनियम की धारा 134 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	पहली बार के अपराध के लिए पचास हजार रुपये और इसके पश्चात् ऐसे ही हर अगले अपराध के लिए इस राशि में शत प्रतिशत की बढ़ोतरी होती जायेगी।
4.	इस अधिनियम की धारा 135(1)(क) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के 10 प्रतिशत तक की राशि तक या एक लाख रुपये, दोनों में से जो भी अधिक हो।
5.	इस अधिनियम की धारा 135(1)(ख) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के 5 प्रतिशत तक की राशि तक या एक लाख रुपये, दोनों में से जो भी अधिक हो।
6.	इस अधिनियम की धारा 135(1)(ग) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के 10 प्रतिशत तक की राशि तक या एक लाख रुपये, दोनों में से जो भी अधिक हो।
7.	इस अधिनियम की धारा 135(1)(घ) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के 10 प्रतिशत तक की राशि तक या एक लाख रुपये, दोनों में से जो भी अधिक हो।
8.	इस अधिनियम की धारा 135क के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के 5 प्रतिशत तक की राशि तक या एक लाख रुपये, दोनों में से जो भी अधिक हो।

(ग) उक्त नियमावली में सलग्न फार्म में, क्रम संख्या 12 के पश्चात् निम्नलिखित को अंतःस्थापित किया जायेगा, यथा :—

“12क. क्या शुल्क, दण्ड और ब्याज की राशि का भुगतान कर दिया गया है यहि हों तो उसका व्यौरा क्या है”

[फा. सं. 450/67/2003—सीमा शुल्क-IV (पार्ट)]

असीम कुमार, अवर सचिव

वाद टिप्पण :—प्रधान अधिसूचना सं. 114/2005—सीमा शुल्क (गै.टै.) दिनांक 30 दिसम्बर, 2005 को सा.का.नि. 755(अ), दिनांक 30 दिसम्बर, 2005 के तहत भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग II, खंड 3, उप-खंड (i) में प्रकाशित किया गया है।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

NOTIFICATION

New Delhi, the 12th November, 2008

No. 118/2008-Customs (N.T.)

G.S.R. 786(E).—In exercise of the powers conferred by clause (h) of sub-section (2) of Section 156 read with sub-section (3) of Section 137, of the Customs Act, 1962 (52 of 1962), the Central Government hereby makes the following rules to amend Customs (Compounding of Offences) Rules, 2005, namely :—

1. (1) These rules may be called the Customs (Compounding of Offences) Amendment Rules, 2008.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Customs (Compounding of Offences) Rules, 2005 (hereinafter referred to as the said rules),—

(a) in rule 4, in sub-rule (3), after the proviso, the following shall be inserted, namely :—

“Provided further that application shall not be allowed unless the duty, penalty and interest liable to be paid have been paid for the case for which application has been made.”;

(b) for rule 5, the following rule shall be substituted, namely :—

“5. Fixation of the compounding amount.—For the purpose of compounding of offences under the various provisions of the Act, the compounding amount shall be as provided in the following Table :

Provided that if a person has, in respect of same goods, committed offences falling under more than one category specified above and where amount of duty evasion, or, amount of drawback or exemption from duty, provided under the Act in connection with export goods; or amount of market value of the goods is same for all such offences, the compounding amount, in such cases, shall be the amount determined for the offence for which a higher compounding amount has been prescribed.

TABLE

Sl. No.	Offence	Compounding amount
(1)	(2)	(3)
1.	Offence specified under Section 132 of the Act	Fifty thousand rupees for the first offence and to be increased by hundred per cent of this amount for each subsequent offence.
2.	Offence specified under Section 133 of the Act	Fifty thousand rupees for the first offence and to be increased by hundred per cent of this amount for each subsequent offence.
3.	Offence specified under Section 134 of the Act	Fifty thousand rupees for the first offence and to be increased by hundred per cent of this amount for each subsequent offence.
4.	Offence specified under Section 135(1)(a) of the Act	Upto ten per cent of the amount of market value of the goods or one lakh rupees, whichever is higher.
5.	Offence specified under Section 135(1)(b) of the Act	Upto five per cent of the amount of market value of the goods or one lakh rupees, whichever is higher.
6.	Offence specified under Section 135(1)(c) of the Act	Upto ten per cent of the amount of market value of the goods or one lakh rupees, whichever is higher.
7.	Offence specified under Section 135(1)(d) of the Act	Upto ten per cent of the amount of market value of the goods or one lakh rupees, whichever is higher.
8.	Offence specified under Section 135A of the Act	Upto five per cent of the amount of market value of the goods or one lakh rupees, whichever is higher.

(c) in the Form appended to the said rules, after serial number 12, the following shall be inserted, namely :—

“12A. Whether the amount of duty, penalty and interest have been paid and if yes, the details thereof.”

[F.No.450/67/2003-Cus. IV (Pt)]

ASEEM KUMAR, Under Secy.

Note :—The principal notification No. 114/2005-Customs (N.T.), dated the 30th December, 2005, was published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), vide number G.S.R. 755(E), dated the 30th December, 2005.